ISSN2321-5372

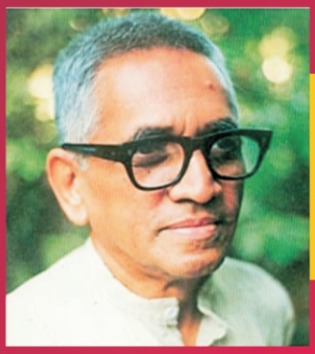

समर्पित पत्रकार, समाजसेवी, साधनाकार
आंतरभारती के सच्चे प्रवक्ता, समाजलक्ष्यी साहित्यकार
आद. स्व. यदुनाथजी थत्ते को उनके स्मृतिदिन पर
आंतरभारती का विनम्र प्रणाम !

मेहनत उसकी लाठी है मजबूती उसकी काठी है ,
विकास की वह नींव है । उसका जीवन सीख है ।
मजदूर दिवस की शुभकामनाएं !

आंतर भारती

ANTAR BHARATI

हिन्दी मासिक

एकात्म भारत के पुनर्निर्माण के
युवा अभियान का सशक्त
अखिल भारतीय अभिव्यक्ति मंच

www.antarbharati.org.in

* वर्ष : ६० * अंक ५ * मई २०२३* १० रुपये * वार्षिक : १०० रुपये * आजीवन : १००० रुपये

जलपुरूष डॉ. राजेंद्रसिंह राणा का आसना नदी पुनरूज्जीवित करने के लिए सरकार की ओर से आयोजित कार्यक्रम के दरम्यान सत्कार करते हुऐ आंतरभारती की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष संगीता देशमुख

जलपुरूष डॉ. राजेंद्र सिंह राणा के साथ मान्यवर

आंतरभारती की राष्ट्रीय बैठक की पूर्व तयारी सभा में जुटे आंतरभारतीप्रेमी

आंतर भारती

हिन्दी मासिक पत्रिका

आंतर भारती स्वप्नद्रष्टा
साने गुरुजी

संस्थाध्यक्ष/ पूर्व संपादक
स्व. सदाविजय आर्य

प्रेरक, संवर्ध्दक संपादक
स्व. यदुनाथ थत्ते

■ कार्यकारी संपादक
प्राचार्य सुभाष वर्धमान शास्त्री
सुदीक्षा, ९ इंडस्ट्रीयल इस्टेट
होटगी रोड,
सोलापूर – ४१३००३ (महा.)
मो. ९८९०६११४०१
E-mail : subhashvshastri@gmail.com

■ प्रधान संपादक
डॉ. सी. जय शंकर बाबु
अध्यक्ष : हिन्दी विभाग,
पांडिच्चेरी विश्वविद्यालय, कालापेट,
पुदुच्चेरी–६०५०१४
मो. ९४४२०७१४०७
E-mail : editor.antarbharati@gmail.com

आंतर भारती साने गुरूजी का एक स्वप्न जो असीम युवा शक्ति को सृजनात्मक उपयोगिता हेतु समर्पित, युवाओं की सम्भाव्यता, प्रवीणता, प्रेरणा व विश्वास के नए आयाम प्रदान करती है ।

विश्वस्त – कोषाध्यक्ष
डॉ. उमाकांत चनशेट्टी
मु.पो. बोरामणी ४१३२३८
जि.सोलापूर–४१३००३ (महा)
मो. ९५५२६३७९००

Visit US : antarbharati.org.in

प्रबंध कार्यालय
आन्तर भारती
साने गुरुजी मार्ग,
औराद शहा. (महा.) ४१३५२२

संपादक
ज्योतिराव लढके

मार्गदर्शक
■ डॉ. इरेश स्वामी ■ अमर हबीब ■ पांडुरंग नाडकर्णी ■

सहयोगी – मधुश्री आर्य

प्रकाशित सामग्री से प्रकाशक/संपादक सहमत ही हैं ऐसा न मानें ।

ANTAR BHARATI : A dream of Sane Guruji Committed to the constructive utilization of boundless Youth Power, gives new dimensions to the potentiality, Skills, Inspiration & Belief of the youth.

आंतर भारती (मासिक पत्रिका) प्रकाशक कार्याध्यक्ष, आंतर भारती द्वारा मुद्रक मॅजिक पब्लिकेशंस लातूर के लिए मुद्रित कर आंतर भारती संकुल औरादशहाजानी से प्रकाशित की ।

आंतर भारती - मई-२०२३

इस अंक में

१) संपादकीय : आईये, आंतर भारता को और...	-	३
२) वेमना का तत्वज्ञान....	-	५
३) बसव वचन...	-	६
४) तिरुवल्लुवर वाणी...	-	७
५) मिट्टी सत्याग्रह अहवान पत्रक	-	८
६) प्रथम पाठशाला	-	१०
७) बस्तों (दफ्तरों) का रहस्य	-	१३
८) आज एक ऐसा अनुभव हुआ जिसे मैं ..	-	२०
९) असली गरीब कौन	-	२१
१०) आध्यात्मिक विकास कोई पार्ट- टाईम जॉब नहीं है ।	-	२२
११) एक अमेरिका खद्दरधारी	-	२३
१२) समाचार	-	२४

संपादकीय

आईये, आंतर भारता को और समृध्द करें !

– प्राचार्य सुभाष वर्धमान शास्त्री

हर साल की तरह आंतरभारती की सर्वसाधारण सभा १० मई २०२३ को अजमेर में संपन्न होने जा रही है । हर वर्ष अपनी गत उपलब्धियाँ और आनेवाले वर्ष में कुछ नये संकल्पों को लेकर साधन–बाधक चर्चाएं इस बैठक में होती है । होनी भी चाहिये यह सही में अपने सात्विक उत्साह का समाज के प्रति दायित्व का द्योतक भी हैं। ध्यातव्य बात यह भी है कि १० मई के दिन स्व. यदुनाथ थत्ते जी का स्मृतिदिन है । उनकी स्मृति में हर वर्ष अन्य अन्य राज्यों में आंतर भारती की सर्वसाधारण सभा संपन्न होती है । साने गुरूजी 'साधना' जैसे मासिक के माध्यम से साहित्य, शाश्वतमूल्य, राष्ट्रीय एकात्मता, सामाजिक सामंजस्य, समता जैसे शाश्वत मूल्यों की आराधना की । सात्विक साहित्य संवर्धन तथा उस माध्यमसे समाजस्वास्थ जैसा महान उद्दिष्ट लेकर 'साधना' का कार्य होता था । साथ ही साथ जातिअंत तथा भाषाबांधव्य से राष्ट्रीय स्तर पर एकात्मता का दुष्कर कार्य आंतर–भारती के माध्यम से साहित्य तथा सामाजिक धरातल पर होता था । आंतर भारती की सुचारू रूप से धुरा स्व. यदुनाथ थत्तेजी ने संभाली थी । ''जिस ओर मैं जाता हूँ, उस ओर मुझे मेरे बांधव दिखायी देते है'' । इस तरह की भावना रखनेवाले साने गुरूजी मानवता के साधक–पूजक थे । समाजचिंतन करते हुए सामाजिक अद्वैत को भी मानते थे ।

बाबासाहेब आंबेडकर ने कहा था एक दूसरे के साथ समनुयोग (कम्युनिकेशन) करना, एक–दूसरे में आदान–प्रदान की वृत्ति को बढाना समाज के विभिन्न घटकों को अन्य–अन्य मार्गों से अंत में एक ही मंच पर, लाकर जोडना । यही बात आंरतभारती ने भी एकता, आदान, प्रदान तथा समाज सांमजस्य के लिए पूरी संवेदनशीलता के साथ संवाद–साधना करने की कोशीश की है । साने गुरूजी हमेशा सोचते रहे कि भारत की विविध भाषाओं में सामंजस्य हो । भाषा को लेकर जो विवाद–भेद होते हैं, वे मिटाए जा सकते है । साथ ही मतभेद को भी जल्द कम किया जा सकता है । आवश्यकता है मतभेद को मिटाने की ! इसका पूरा समाधान आंतरभारती में है । आंतर–भारती की संकल्पना के क्रियान्वयन से ही सांस्कृतिक–समाजिक संवाद स्थापित हो सकता है, ऐसी धारणा साने गुरूजी की थी । भाषा के साथ साथ पूरे भारत को एक ही धरातल पर समाहित करनेवाला और मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में मानव मन को प्रतिष्ठित करनेवाला एक केंद्र हो,

जहाँ आनंद, सेवा, श्रम, औदार्य, ज्ञान, विज्ञान तथा कलायुक्त सौहार्द्रपूर्ण शिक्षण ही आंतर भारती का मूल उद्दिष्ट है ।

स्व. यंदुनाथ थत्ते आंदोलन-कार्यकर्ता थे ही । राष्ट्र सेवादल में रहकर उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलनों में सक्रिय सहभाग लिया । साहित्य के मर्मज्ञ होने के साथ साथ एक सजग पत्रकार भी थे । इसी लिए उनकी ग्रन्थसंपदा, सामाजिक प्रबोधन, व्यक्तिचित्रण, बालसाहित्य, कवितासंग्रह उपन्यास, चरित्रलेखन व्यक्तिचित्रण, विज्ञान, अध्यात्म, ज्ञान इ. अनेक साहित्य विधाओं में उनका लेखन, साहित्यसंवर्धन एवं समाजप्रबोधन में विशेष योगदान देता रहा है, यह निस्संदेह बात है । महात्मा गांधी, साने गुरूजी तथा विनोबा भावे के वे सच्चे अनुयायी थे । वे राष्ट्रीय अस्मिता, नीतिमूल्यों की प्रतिष्ठा तथा धर्मनिरपेक्षता जैसे विचारों के पक्षधर थे । मात्र पक्षधर नहीं, इन मूल्यों का प्रचार-प्रसार तथा कार्यरूप में लाने का सतत प्रयास उनका रहता था । अपने कर्तव्य तथा श्रध्दानिष्ठा के साथ इमानदार होने के कारण ही उन्होंने आंतर भारती विचारधारा को आत्मीयता से जिया ।

अनेक शिक्षासस्थाएं, संदर्शन यात्रा, संपूर्ण देशमर में होने वाले उदात्त विचारों के शिविर-शिक्षक तथा बालकों के मेले इ. आयोजनों के साथ वे आंतर भारती कार्यप्रणालि को प्रयासपूर्वक जोडते ही थे । शिक्षकों से अनेक भाषा अध्ययन करने के विषय में आग्रह रहता था । हर व्यक्ति कम से कम द्विभाषिक होना चाहिये, ऐसा विनोबाजी कहते थे । यदुनाथजी चार-पाँच भाषाओं को जानते-समझते थे । यदुनाथजी कहते थे, '' न्याय, स्वातंत्र्य और बंधुता वा अपनापन इनके आधारपर ही देश का नवनिर्माण संभव है । यह मात्र कानून की मदद से नहीं हो सकता, उनके लिए लोकमानस तयार करना होगा, यह कार्य आंतर भारती के विशेष आयोजनों से निश्चित संभव है । एकात्म समाज की संकल्पना को क्रियान्वित करने के लिए अनेक उपक्रमों को अपनाया ।

आंतर भारती कार्यक्रम को समृध्दि देने के लिए उन्होंने देश के विविध राज्यों में श्रमसंस्कार शिबिर युवासम्मेलन, बाल आनंद मेला, साने गुरूजी कथामाला आदि विशेष गतिविधियों को समर्पित होकर किया ।

आंतरभारती गतिविधियों को सुब्बारावजी, मोहाडिकर, चद्रकांत शहा, परीट गुरूजी जैसे समर्पित कार्यकर्ताओं ने आगे चलाया । यहाँ विशेष उलेखनीय बात है कि स्व. आर्य सदाविजय जैसे आंतर भारती के सच्चे सेनानी ने लगभग ५०-५५ वर्षोंतक आंतर भारती के विचारों को अगली पीढितक पहुँचाया । मेरे लिए तो वे ही प्रेरणास्थान थे । आंतर भारती (राष्ट्रीय) की नयी कार्यकारिणी नये उत्साह के साथ कार्यनिर्वहण कर रही है । १० मई की तर बैठक में आंरत भारती की विचारधारा को सोत्साह प्रोत्साहन मिलेगा । इसी आशा के साथ !

वेमना का तत्व-चिंतन

तेलुगु मूल - योगी वेमना

(देवनागरी लिप्यंतरण, हिंदी अनुवाद एवं व्याख्या – डॉ.सी.जय शंकर बाबु)

ओदिगि योदिगि गुरुवु नोप्पुग नोप्पिंचि
मदिनि निल्पि जातिममत विडिचि
कदियुचुंडु नतडु कलकाल मोकरीति,
विश्वदाभिराम विनुर वेम ।

सिमट सिकुड़ गुरु को सही रूप में संतुष्ट कर
मन लगाकर जाति की ममता छोड़
लगातार एकाग्र श्रद्धावनत होता वह
विश्वदाभिराम! सुनरे वेमा !

व्याख्या–पंडित कभी भी बड़ी निष्ठापूर्वक गुरु की सेवा–संतुष्टि सुनिश्चित कर श्रद्धापूर्वक ज्ञानार्जन कर जाति–संप्रदाय, देह–मन का मोह छोड़कर हमेशा एक ही ढंग से रहता है । ज्ञान–तत्व पाने वाले की विशिष्टता कोस्पष्ट करते हुए उसके श्रेष्ठ व्यवहार का बयान करते हैं वेमना ।

महात्मा बसवेश्वर वचन

।। मूळ कन्नड वचन ।।

बलेगे सिक्किद मृगदंते नानरय
मरिदपिप्द हुल्लेंयंते देसे देसेगे बायि
बिडुतिरूवेनय्या नानार सारुवेनय्या !
तायागि तंदेयागि नीने सकल बंधुबळगवु
नीने कूडल संगमदेव ।

हिंदी काव्यानुवाद

पाश में फसे मृग की तरह मैं
बच्चे को खोये हुए मृग की तरह
विवश मैं थकित
तुम ही मेरे माता–पिता–बंधु
कूडल संगमदेव ।

भाष्य

हे कूडलसंगम देव, तुम ही मेरे माता पिता हो, तुम ही बंधु सबकुछ हो । लेकिन अभी मैं पाश में फसे मृग की तरह बहुत विपदा में हूँ । बच्चे को खोये हुए हिरनी की तरह मेरी हालत हुई है । दिशाहीन होकर घूम रहा हूँ, लक्ष्यार्थ यह है कि मैं संसार में बुरीतरह से फंसा हुआ हूँ । तुम ही मुझे इससे उबार सकते हो ।

डॉ इरेश सदाशिव स्वामी
विद्या, १२ ब्रहमचैतन्य नगर,
विजयपुर रस्ता, सोलापूर–४१३००४
भ्रमण : ९३७१०९९५००

तिरुवल्लुवर वाणी तिरुक्कुरल

तमिल मूल – संत तिरुवल्लुवर

(देवनागरी लिप्यंतरण, एवं हिंदी हाइकु
अनुवाद – डॉ.सी.जय शंकर बाबु)

प्रथमखंड – अरत्तुपाल (धर्मखंड)
तुऱवऱवियल्(संन्यास–धर्म)
अध्याय २५. अरुळुडैमै(दया)

अरुळिल्लार्क्कु अव्वुलहम् इल्लै पोरुळिल्लार्क्कु
इव्वुलहम् इल्लाहि याङ्गु । (कुरल – २४७)

धनहीन का
नहीं यह लोक, वो
न निर्दयी का ।

भावार्थ –तिरुवल्लुवर दया को बड़ा महत्व देते हैं और सहृदयी सर्वलोक योग्य मानते हैं इसी चिंतन के आधर पर । वे कहते हैं कि धनहिन का यह लोक नहीं है और दयाविहीन करुणहीन व्यक्ति का वह लोक (पर लोक) भी नहीं । अतः तिरुवल्लुवर का मानना है कि सहृदयीधनहिन होने की वजह से भले ही उसे इस लोक में जीवन दुःखदायी, मगर वह अपने गुण की वजह से परलोक का अधीकारी बन सकता है जबकि दयाविहीन उसके योग्य नहीं ।

पोरुळट्रार् पूप्पर् ओरुकाल् अरुळट्रार्
अट्रार् मुट्रादल् अरिदु। (कुरल – २४८)

दीन संपन्न
भी हो, दयाहीन में
सुधार नहीं ।

भावार्थ –तिरुवल्लुवर का मानना है कि जिसकी संपत्ति नष्ट हो जाती है वह पुनः संपन्न बन सकता है जबकि दयाविहीन निष्करुण की स्थिति में कभी सुधार संभव नहीं है ।

विशेष आलेख

मिट्टी सत्याग्रह अहवान पत्रक

– सुनीती सु.र.

गीली मिट्टी का तिलक लगाकर मिट्टी से इमानदारी रखने की सौगंध रवाकर किसान–कानून वापस लेने की मांग के लिए शुरू हुए किसान–आंदोलन के समर्थन में मिट्टी सत्याग्रह में शामिल हों !

कुछ साल पहले दिल्ली की सीमा पर ही नहीं तो देशभर में किसान–खेत मजदूरो का आक्रोश उमड रहा था । देश के संवैधानिक मूल्य समता न्याय सर्वधर्मसमभाव तथा समाजवाद यही जनतंत्र शासन प्रशासन–नागरिकत्व, विकास तथा जीवन प्रणाली का आधार होगा ऐसा मानने वाले हम सब नागरिक चिंतित है। अनेक व्यक्ति, समूह, संगठन–जिसमें श्रमजीवी तथा बुद्धिजीवी दोनों ही शामिल हैं। अपनी अपनी शक्ति तथा प्रतिबद्धता से लड रहे थे.... अपने अधिकार प्रस्तुत करते हुए, सत्य स्थापित करते हुए, अहिंसा का व्रत लेकर प्राणाहुति स्वीकारते हुए आगे जा रहे थे। जीत भी रहे थे ।

संयुक्त किसान मोर्चा के येह ५०० संगठनों के समन्वय से रास्ते पर आए हुए किसान–मजदूर लडते समय हमें भी इस जन आंदोलन के माध्यम से समाज को आगे ले जाने में आज के अन्याय तथा विषम स्थिति में परिवर्तन लाने में सहभागी होना चाहिए । इस आंदोलन में तकरीबन २५० लोगों ने शहादत स्वीकार की हैं थी । फिर भी शासकीय हिंसा को यह आंदोलन अहिंसक पध्दति से ही सामना कर रहा हैं । १०० दिन पूरे किए हुए इस आंदोलन की नाल जुडती है । वह है भारत की स्वतंत्रता की लडाई से । सौ वर्ष पहले के रौलट ॲक्ट के विरोध में असहकार आंदोलन १९३० में हुई दांडी यात्रा, नमक सत्याग्रह वह समय और उसमें से उमडा हुआ भारत का प्रतिसाद इस से प्रेरणा दे रहा था, मार्ग दिखा रहा था । आज आवश्यकता है, नमक नहीं अपितु मिट्टी हाथ में लेकर खेती, किसान,अन्नसुरक्षा बचाने की । इसके लिए युवाओं ने पहल लेकर मिट्टी बचाओं सत्याग्रह आयोजित किया है । इस सत्याग्रहद्वारा ही गलि गांवो में पहुंचने वाले साभी इस देश के जल,जंगल, जमीन, नैसर्गिक संपत्ति तथा आजीविका बचाने के लिए जंग छेडना चाहती है । इसी मार्ग से आज आघात सहन करती हुई लोकशाही तथा संगठना की बहुमूल्य चौखट भी बचानी है । जाति–धर्म लिंगभेद से होने वाले अत्याचार नकारना है तो समता की पुकार जरूरी है ।

अपने अपने स्थानिक क्षेत्रों में, महाराष्ट्र के जिले–जिले में विविध मार्ग, कार्यक्रम के रूप में अनेक संगठन, समन्वय

के साथ बनाएंगे गाँवो बस्तियों से मिट्टी से भरे कलश लेकर बीज लगाते हुए घूमेंगे तथा संवाद करेंगे ।

१२ मार्च से १९ मार्च तक के जनसंवाद के क्रर्यक्रम के बाद ३० मार्च को दिल्ली की तरफ कूच करते हुए सैकडो साथी दिल्ली पहुंचेंगे तथा नमक सत्याग्रह के प्रेरणादिन ६ अप्रैल को मिट्टी सत्याग्रह के रूप में नई स्वतंत्रता की लडाई का आहवान पहुंचाएंगे ऐसा विचार है, संकल्प है ।

इस सत्याग्रह अभियान का प्रारम्भ १२ मार्च दांडी यात्रा के प्रारम्भ–दिन से शुरू हो रहा है । महाराष्ट्र के हरेक जिले में विविध कार्यक्रमों में हजारों लोग मिट्टी की शपथ लेंगे महाराष्ट्र के जैसा ही देश के विविध राज्यों में यह सत्याग्रह कल से शुरू हो रहा है एक जगजागृति का, जन सकल्प का आविष्कार है, आइए, सब शामिल हो जाए।

तानाशाही, कार्पोरेटशाही के खिलाफ
हम सब एक है, हम सब साथ है,
किसान मजदूर एकता जिंदाबाद ।
किसा आंदोलन जिन्दाबाद ।

आपके स्नेही

मेधा पाटकर, सुनीती सु.र. संजय मं. गो, सुहास कोल्हेकर, युवराज गटकळ, अनिता पगारे, (जन आंदोलन के राष्ट्रीय समन्वयक) सिरत सातपुते, संजय रेंदाळकर, सदाशिव मगदुम (राष्ट्र सेवा दल), सुभाष लोमटे (मराठवाडा), विलास भोंगाडे (कष्टकारी जनआंदोलन), अविनाश पाटील (महाराष्ट्र प्रदेश सर्वोदय मंडळ), विजय दिवाण तथा संदीप पाटील (आचार्य विनोबा भावे जन्मस्थान समिति, गागोदे), पंकज दळवी (रत्नागिरी) कमलताई परूळेकर (राष्ट्र सेवादल, आंगनवाडी कर्मचारी सभा, सिंधुदुर्ग), जगदिश खैरालिया (श्रमिक जनता संघ) इंदरी तुळपुळे (श्रमिक मुक्ति संगठना) गीताली वि.मं.(पुरूष उवाच), संकेत मुनोत (Knowning Gandhi Glolal Friends) तथा अन्य साथी–संगठना, मिट्टी बचाओ सत्याग्रह के लिए ।

(संपर्क–सुनीती सु.र. – मो. ९४२३५७१७८४

हिन्दी भाषान्तर : **मधुश्री आर्य**
मो. ६३७७२३७१६०

सूचना

आन्तर भारती न राजनीति की पत्रिका है न साहित्य की । इसमें मानवता, सामाजिकता संबंधी प्रेरक लेख, कहानी, अनुभव प्रसंग, कविता, कहानी, समाचार भेज सकते हैं । इन्हें डाक द्वारा, मेल द्वारा, व्हाटसप द्वारा, आप भेज सकते हैं । उपयोगी रचनाओं का प्रकाशन होगा । रचनाएँ हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी में भेज सकते हैं ।

प्रथम पाठशाला

– डॉ. अनुपमा उजागरे

(डॉ. अनुपमा उजागरे द्वारा विद्यार्थियों के लिए लिखी 'ज्योतिबा : एक महात्मा' इस पुस्तक में से)

ज्योतिबा ने केवल आठ लडकियों को लेकर भिडे वाडे में भारत की पहली शाला खोली । प्रा.ना.ग.पवार ने छह लडकियों को लेकर यह शाला प्रारम्भ होने का पुस्तक में लिखा हैं । अन्नपूर्णा जोशी (५ वर्ष उम्र), सुमती मोकाशी (उम्र ४ वर्ष) दुर्गा देशमुख (उम्र ६ वर्ष) माधवी थत्ते (उम्र ६ वर्ष) सोनू पवार (उम्र ४ वर्ष) तथा जानी करडिले (उम्र ५ वर्ष) ये वे छह लडकियां थी।

वहाँ शिक्षिका के रूप में अपनी रिश्तेदार सगुणाबाई की नियुक्ति ज्योतिबा ने की 'ज्योतिबाके' घर आने से पहले जॉन नाम के एक अंग्रेज दम्पति के बच्चे संभालने का काम सुगणाबाई करती थी । इसलिए बच्चों के साथ रहकर वे भी अंग्रेजी बोल सकती थी । परन्तु उन्हें अंग्रेजी या मराठी लिखना बिलकुल नहीं आता था । ज्योतिबा को सीखने के लिए प्रोत्साहित करने वाली सगुणाबाई को ज्योतिबा ने सिखाया ।

सावित्रीबाई शाला में सिखाने जाने लगी तब समाजविरोधियों को सहन नहीं हुआ । प्रारम्भ में उन्होंने चिढाकर देखा । बाद में धमकियां देकर देखा । फिर भी बाई घर में न बैठकर सिखाने के लिए बाहर जाती रही है तो शरीर पर कीचड फेंकना, गोबर डालना, गन्दा पानी डालना आदि प्रकार बेशर्मी से लोग करने लगे जिससे सावित्रीबाई को दो साडियां रखनी पडती थी । एक पहनी हुई तथा दूसरी लोगों द्वारा मार्ग में गन्दगी डालने से खराब होने पर कक्षा में जाने से पहले बदलने के लिए ।

सावित्रीबाई ने उन बदमाशों को समझदारी से कहने का प्रयत्न किया । भाइयों में अच्छे काम के लिए जा रही हूँ तुम मेरे शरीर पर गोबर फेंकते हो, मुझे पत्थर मारते हो, ये पत्थर मैं फूल समझती हू..... परन्तु फिर ऐसा मत करना.

परन्तु कोई भी सुनने की परिस्थिति में नहीं था । एक बार ऐसेही कोई कुछ उल्टा सुल्टा बोल ने पर सावित्रीबाई ने आव देखा न ताव, बोलने वालों को मुँहतोड जवाब दिया ।

सावित्रीबाई को समाज के बदमाशों से होने वाला कष्ट उस्ताद लहूजी साळवे के कान पर गया । उन्हें अत्यन्त दुःख हुआ । उन्होंने एक पहलवान सावित्रीबाई के साथ दिया । तब कहीं जाकर यह कष्ट कुछ कम हुआ ।

ज्योतिबा के विरूध्द फिर से एकबार लोगों ने गोविन्दराव (ज्योतिबा के

पिता) के कान भरे । इसबार विषय ज्योतिबा की शिक्षा का नहीं था अपितु स्त्री शिक्षा का था । स्त्रियों–की शिक्षा की बात दूसरों की तरह गोविन्दरावजी के भी समझ के बाहर थी । इसलिए हमारी बहू सीखती है। यह ठीक ही है, ऐसी धारणा हो गई । गोविन्दराव ने एक लिखित आदेश दिया '' या तो यह काम बंन्द करो नहीं तो घर से निकल जाओ।

ज्योतिबा ने पिता का घर छोडने का निर्णय लिया स्त्रीशिक्षा का काम वे रोकना नहीं चाहते थे । फुले दम्पती घर के बाहर निकले । तब कहाँ जाए और कैसे रहें, यह बडी समस्या उनके सामने थी । अंत में सदाशिव बल्लाळ गवंडी (राज) ने उन्हें जगह दी ऐसा ''ज्ञानोदय'' ने कहा है (१५ दिसम्बर १८५३) राधराऊत मातंग तथा राणबा हरिजन ने चन्दा जमा करने में मद्द की । ज्योतिबा ने हरिजन तथा मातंगों के लिए शाला प्रारंम्भ की थी परन्तु छह महीनों में ही घर से बाहर जाना पडा और कुछ दिन शाला बन्द रखनी पडी ।

नगर में मिस सिंधिया फेरार की शाला में कैसे सिखाए ? इसका प्रशिक्षण दिया जाता था । वे वहाँ कैसे आई यह पहले बताना आवश्यक हैं ।

'' मराठी मिशन इन वेस्टर्न इंडिया ने शाला शुरु करना, व्यवस्था करना और शिक्षिका तैयार करने का केन्द्र चला सकें ऐसी एकाध अविवाहित, निराधार तथा सुशिक्षित स्त्री भेजें ऐसी प्रार्थना अमेरिकन मिशन बोर्ड को की । विशेषतः यह सब स्त्रियों के संदर्भ में था इसलिए स्त्री ही हो ऐसा अमेरिकन मराठी मिशन का आग्रह था।

पुरूष अविवाहित और निराधार हो तो मिशनरी (पादरी) कहकर उसे देश से बाहर भेजने के लिए अमेरिकन मिशन तैयार नहीं था । परदेस में जाना है तो विवाहित होना, यह अन्य योग्यताओं में से एक मुद्दा था । पुरूषों के बारे में यह लक्ष्य और स्त्रियों के बारे में तो मिशन ने विचार ही नहीं किया था । इसलिए अमेरिकन मिशन बोर्ड को अमेरिकन के समाचारपत्र में यह निवेदन देना पडा । यह पढकर मिस सिंथिया फेरार ने उस आव्हान का उत्तर दिया । उनके इस धैर्य का तब बहुत स्वागत हुआ था ।

मिस सिंथिया फेरार १८२७ के दिन बोस्टन से निकली और मुंबई दिनांक २९ दिसम्बर १८२७ को पहुंची भारत में आए अमेरिकन मिशन के मिशनरी में से वे पहली महिला मिशनरी और पहिली अविवाहित मिशनरी थी ।

मिस सिथिया थे उत्तम प्रशासक थी । मुम्बई में ही रहकर फेरारबाई ने अमेरिकन मिशन का अपेक्षित कार्य किया । १८२९ तक उनकी शाला में भारतीय विद्यार्थिनियों की संख्या ४०० तक चली गई। १८३७ और १८३८ इन दो वर्षो में वे अस्वस्थता के कारण छुट्टी पर अपने मातृगृह गई । १८३९ में भारत में फिर आई तब

उनकी बदली अहमदनगर में की गई ।

स्त्रियों को शिक्षिका पेशे का प्रशिक्षण देनेवाली उस शाला को ''फेरारबाई की शाला '' कहा जाता था। अहमदनगर की यह शाला ज्योतिबा ने उनके मित्रों को दिखाई तब वहाँ का व्यवस्थापन उन्हें अनुकरणीय लगा । हम भी ऐसी ही शाला शुरू करेंगे ऐसा उन्होंने निश्चय किया ।

ज्योतिबा के मित्र गोवंडे पुणे आए और सावित्रीबाई को अहमदनगर ले गए । वहाँ केशव शिवराम भवाळकर के साथ रह कर फेरारवाई की शाला में सावित्रीबाई प्रशिक्षण लेकर ज्योतिबा की शाला में शिक्षिका तथा मुख्याध्यापिका बन गई । सावित्रीबाई फुले ये भारत की पहिली शिक्षिका ! भारत की पहली प्रशिक्षित शिक्षिका तथा पहली मुख्याध्यापिका भी बनी ।

मुंबई तथा अहमदनगर में फेरारबाई की प्रशिक्षण शाला में सावित्रीबाई प्रथमतः प्रशिक्षण ली हुई मराठी भारतीय ख्रिस्ती–ख्रिस्तेतर शिक्षिका तैयार हुई होगी, पर उनका उल्लेख अभी तक उपलब्ध नहीं हैं।

१८५१ में ज्योतिबा की शाला फिर प्रारम्भ की गई । ज्योतिबा की शाला में लडकियों की संख्या बढने लगी । एज्युकेशन बोर्ड के प्रेसिडेंट सर थॉमस अरिर्कन पेरी और सरकारी सचिव लुम्सडेन ने ज्योतिबा के स्त्री शिक्षण कार्य के बारे में जांच की सर थॉमस अर्स्किन पेरी ने संतोषजनक टिप्पणी दी ।

(टिप्पणी : मिस सिंथिया फेरार (२० अप्रैल १७९५–२५ जाने १८६२) मिससिंथिया फेरार ने ३५ वर्ष भारत में धर्म जाति भेद न करते हुए युवा स्त्रियों को शिक्षिका बनाने का प्रशिक्षण दिया । बिशपों से मिले अनुदान से इस संस्थे का खर्च वे चलाती थी । शिक्षणक्षेत्र में कार्य करके मिस सिंथिया फेरार ने अहमदनगर में अपना शरीर रखा । परदेश में सेवाभावी मिशनरी के रूप में अपना जीवन समर्पित करने वाली फेरारबाई के स्मारक उनके देश ने कृतज्ञता से खडे किए हैं ।

हिन्दी भाषान्तर : **मधुश्री आर्य**
मो. ६३७७२३७१६०

अंतर्ज्ञान

जब भी आप अपनी अतीत की गलतियों के लिए खुद की आलोचना करने लगे, खुद को क्रिटिसाइज करने लगे, तो खुद से सवाल पूछें – क्या अतीत को ठीक करने और भविष्य को दुरुस्त करने के लिए मैं 'अभी कुछ कर सकता हूं? अगर जवाब 'हां' में आता है, तो ऐक्शन लेना शुरू कर दें। अगर जवाब 'ना' में आता है, तो सोचना बंद कर दें। आपके पास हमेशा दो ही विकल्प रहने चाहिए– ऐक्शन लो या सोचना छोड़ दो। इसके अलावा कुछ भी करना बेमानी है। सोचने को लत न बनाएं। इस ताकत का उपयोग अपने काम पूरे करने के लिए करें।

प्रेरणा भारती

बस्तों (दफ्तरों) का रहस्य

तृप्ती जोशी कुलश्रेष्ठ

पाठशाला में क्या–क्या हुआ वह सार कुछ चौथी पांचवी तक के घर में पालकों को बताने वाले बच्चे, सातवीं आठवी में जाने के बाद कुछ बातें टालकर बताते हैं घर क्या बताना, क्या नहीं इसका गणित लगाने लगते हैं । इसलिए उनकी भाषा में बोलें तो बालिग होनेपर उनकी खास सीक्रेटस या रहस्य अपनों तक या पालकों तक आती ही नहीं परन्तु अब बच्चा या जवानी में प्रवेश करने वाले बच्चे के पालक होने के लिए यह सीक्रेटस डारावनी या तनाव बढानेवाली हो सकती हैं । छोटे बच्चों में अब तक सर्व साधारण ड्रग्ज और सेक्स के प्रमाण घर पूछने का डर बढता जा रहा है। यह सब महत्वपूर्ण होने का कारण पिछले सप्ताह वर्तमानपत्र में आई हुई एक खबर। कर्नाटक में एक निजीशाला में अचानक किए गए बच्चों के बस्तों की जांच में निरोध, सिगरेट, ड्रग्स, बीअर के कॅन आदि वस्तुएं मिली, ऐसा उस समाचार में कहा गया था । यह घटना बेंगलूर की होने पर भी उस पर हमें दुर्लक्ष नही करना चाहिए क्योंकि हमारे आसपास भी यही सब कुछ चुपचाप शुरू है । पर हमारे आसपास शुरू है परन्तु कोई भी खुल्लम खुल्ला इस संकट पर बोलते नहीं, समस्या सुलझाते नहीं यह आनेवाली पीढी की दृष्टि से चिंता की बात है ।

पिछले १२ वर्षो में १० से २२ इस उम्र के असंख्य बच्चों का समुपदेशन करने का अवसर अलग–अलग संस्थाओं में मिला समुपदेशक को बच्चों के अन्तरमन में झांकने का अवसर मिलता है । उनकी विचार करने की पध्दति अनेक रहस्य, सबकुछ सुरक्षित तथा पहचान के बारे में गोपनीयता का वातावरण दिखता है । उसमें की कुछ गुप्त बातें उन बच्चों के तथा समाज की दृष्टि से भी धोकादायी होती है । वह जानकर उन्हें समझें तो हम बच्चों की मदद कर सकते हैं । पिछले १२ वर्षो के दरम्यान मुझे, कई बच्चे–बच्चियां मिली भिन्न भिन्न उम्र की भिन्न भिन्न आर्थिक स्तर की परन्तु अधिकतर सभी के प्रश्न एक जैसे थे ।

भौगोलिक दृष्टि से बेंगलूर, मुंबई, दिल्ली जैसे शहरों के समान पुणे, ठाणे जैसे मध्यमवर्गीय चेहरों वाले शहरों में भी अल्कोहोल तथा ड्रग्स सेवन का प्रमाण अधिक बढ गया है । इसकी गंभीरता अधिकतर किसी के ध्यान में नहीं आई । आर्थिक स्तर का विचार करें तो उच्च तथा कम आर्थिक स्तर के बच्चों में ही नहीं तो मध्यमवर्गीयों तक पहुंचा हैं । मध्यमवर्गीय घरों में बच्चों पर बारीक से ध्यान रहता है

तथा घर में प्रत्येक को अलग कमरा होने की स्वतंत्रता न होने से यह बातें छुपी ही रहेंगी ऐसा वातावरण नहीं होता इसलिए सच देखा जाय तो मध्यमवर्गीय बच्चों के लिए व्यसन करना जरा कठिन होता है । पूर्व काल में तो मध्यमवर्गीय घरों में यात्रा का खर्च छोड दे तो चाय–नाष्टा के लिए ही गिने चुने पैसे दिए जाते थे तथा उसका हिसाब भी पूछा जाता था । परन्तु पिछले २० वर्षों में मध्यमवर्गीय घरों में दोहरी कमाई शुरू हो गई तथा मां बाप को नौकरी करिअर के कारण घर में अधिक समय नहीं मिलता । इससे बच्चों को पैसा देते समय पालकों का भी हाथ ढीला हो गया उसमें एकाध दूसरे बच्चे पैसे कहाँ खर्च करते हैं, इसपर पालकों का ध्यान ही नहीं रहा वैसे बच्चों को व्यसनी बनानेवाले ड्रग्स की कीमते कुल मिलाकर देखें तो हजारों में हीं होती । कुछ अम्लीय पदार्थों के लिए कुछ हजार रूपये गिनने पडते हैं । पानी १२० रूपये में १० अर्थात बारा रूपये में एक इतने ही वडापाव से भी सस्ती कीमत में बच्चों तक यह विष पहुंच रहा हैं । जिसकी जेब में जितना हो उतना खर्च कर लेता है । इसलिए मां बाप के भी ध्यान में जल्दी आता नहीं । कई बार पालकों को ऐसा लगता है कि ड्रग्स सहज नहीं मिलते परन्तु यथार्थ में वैसा नहीं हैं । विविध नामों से या अन्य नामों से अब ऑनलाईन भी सहज रूप से मिलने लगा है । इसके अलावा ड्रग्जबिक्रेताओं की श्रृंखला इतनी बडी है कि वह बच्चों तक पहुंचने में कोई दिक्कत नहीं । बीच में तो किशोर वर्ग के बच्चे व्हाइटनर का तथा कुछ विशेष कफ सिरप का प्रयोग नशे के लिए करते हैं, ऐसा समझ में आया तब यह विषय बहुत गरमाया। परन्तु वह केवल हिमशैल का शिखर हैं ।

इन बच्चों से बालचीत करते समय ध्यान में आया कि कइयों की ड्रग्स लेने की शुरूआत उनके समवयीन बच्चों के दबाव से होती है । सुमित ऐसा ही एक १६ वर्ष का लडका, अपने मां–बाप के साथ समुपदेशन के लिए आया उसके माँ–बाप की अच्छी सरकारी नौकरी थी और दोनों प्रातः काम पर जाते और रात सात बजे के आसपास आते थे । इसलिए घर में दिनभर कोई नहीं रहता था । ऐसे हालात में सुमित कॉलेज में नए मित्र ढूंढने के चक्कर में इस विपरीत परिस्थिति में फंस गया । उन बच्चों ने केवल आग्रह ही नहीं अपितु आव्हान ही दिया जिसे अगर मना किया तो उसे डरपोक (उनकी भाषा में फट्ट) समझा जाएगा ऐसा वातावरण बन गया, जिससे सुमित ने मित्रों के आग्रह के कारण नशे की शुरूआत की दिल्लगी से । अब पॉकेटमनी कम पडने लगी तो घर से चुपचाप पैसे उठाना शुरू हो गया अपने ही कमरे में पडे रहता । सुमित जैसे कई बच्चों को यह लगने लगा यह गलत है और हम अडचन में आ सकते हैं, यह भास होने ही लगता है परन्तु हम यह एक बार करके देख रहे हैं, यह कभी कभार मजा

कहकर लेंगे ऐसा बच्चे मन में सोचते हैं । परन्तु बाद में यह सब उनके बस के बाहर हो जाता है । फिसलने वाले रास्ते पर चलने पर फिसलकर कहाँ गिरेंगे । यह अपने हाथ में नहीं होता कि हमारे हाथ में ड्रग्स है । वैसी कल्पना ही नहीं दी जाती । मेरे पास आए हुए एक दस वर्ष के बच्चे को यह गोली खाओ, इससे ताकत आती है ऐसा कहकर ड्रग्स दिया गया था । इससे पहले कक्षा में सब इस बच्चे को छोटू कच्चा नींबू कहकर चिढाते थे । इसलिए इन गोलियों से ताकत आई तो उसे चिढाएंगे नही ऐसा उसे लगा । घर वालों को इस बात की जानकारी नहीं थी । जब यह बात सामने आई तो बच्चा और मां बाप समपुदेशन करके डॉक्टरों की सहायता से इन सब से बच्चे को संकट से बाहर निकाला ।

छोटी उम्र के बच्चे जब अपने से बडी उम्र के बच्चों के साथ खेलते हैं तक थोडा कुछ उनके कान पर आता है । वे बडों का अनुकरण करने जाते हैं । यही नशे तब पहुंचाते है ओ टी टी पर के वेब सिरीज में सदा देखे जाने वाला दारू, ड्रग्स आदि के कारण उसे धोखे की संवेदना समाप्त हो जाती है और वह बात साधारण लगने लगती है । ऐसा मेरा इस बालक से बात करने पर का अनुभव है । उसीमें उन्हें युवावस्था के सारे प्रयोग करके देखने होते हैं । पहले जमाने में तो ज्यादा से ज्यादा सिगरेट पीना, बीअर पीना या अश्लील अंग्रेजी चित्रपट देखने तक सीमित होता था अब उसके स्थान पर खूब शराब पीना और ड्रग्स लिए जाते हैं।

हमे ड्रग्स कहते ही, चित्रपट में देखे अनुसार कुछ पावडर आंखों के सामने आता है । परन्तु ड्रग्स यानी गोलियां शीशी में बन्द सिरप के स्वरूप में हो सकता है । उडता पंजाब सिनेमा जिस ने देखा हैं उन्हें जाते–आते बच्चे कैसे सहज रूप से पचास रूपये की छोटी शीशी खरीदी, यह समझ में आया परन्तु अनेक लोगों को आज भी इस बात का ज्ञान नहीं है । अवैध ड्रग्स के साथ साथ वैद्यकीय कारणों दिये जाने वाले कुछ पेन किलर (दर्दनाशक गोलियों) का प्रयोग ड्रग्स के रूप में किया जाता है । अपना बच्चा अगर ड्रग्स लेता है तो उसे कैसे पहिचाने ? यह एक पालकों के सामने होता है । थोडी सी जानकारी लेकर सतर्क हो जाए तो हमें अंदाज आ सकता है । शारीरिक रूप से ऐसे बच्चों की आंखे लाल दिखती है । त्वचा अलग ही दिखती है । कुछ ड्रग्स लेने के बाद उस व्यक्ति के शरीर से विचित्र प्रकार की गन्ध आने लगती है । उसके रहने और व्यक्तिगत स्वच्छता पर परिणाम होता है । व्यवहार में परिवर्तन आता है । बच्चे पूरी तरह से शिथिल होकर घंटों सोते रहते है या अतिउत्तेजित और आक्रामक होते है । बच्चे एक जगह बैठते नहीं, उन्हें खूब मीठा खाने की इच्छा होती है ।

पढाई में अरूचि दिखाते हैं तथा झूठ बोलते है या व्यवहार के बारे में

समस्याओं के लिए समुपदेशन के लिए एक ११ वर्ष की लडकी उसके मां बाप को लेकर आई । बाकी सब बातों के साथ साथ हर मुलाकात के बाद यह कहती कि मुझे मीठा खाने देने मां को कहिए । शुरू शुरू में मुझे तो कुछ अलग नहीं लगा परन्तु बातचीत के दौरान उससे ही पता चला । कुछ रहस्य और उसके लक्षणों से पता चला कि उसे सहेलियों ने कुछ गोलियां खाने को दी थी । और उसे अब वह गोलियां सदा खाने मन करता है – यह सामने आया । हम अगर अपने बच्चों पर ध्यान दे, जरा उनसे बाताचीत करते रहे तो ऐसी बातें प्रारंम्भ में ही सामने आ सकती है, तथा उस पर उसका समाधान भी सरल हो जाता है, ऐसे बच्चों का पढाई की तरफ से ध्यान हट जाता है, खाने पीने और सोने का गणित ही बिगड जाता है इतना ही नहीं, बच्चे कईबार झूठ बोलते हुए पाए जाते हैं ।

कई बार हमें ऐसा लगता है कि किसी गुनाह में फंसे बच्चे सामान्य घरों के नहीं होंगे परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं था । इसतरह के गुनाह और ड्रग्स, शराब आदि बहुत निकट का सम्बन्ध है । एक बार नशे का स्वाद लग गया कि जेब खर्च (पकिटमनी) काफी नहीं होता । फिर अन्य मार्ग ढूंढना पडता है । घर से चोरी पकडी गई तो फिर सामान्य परिवार के बच्चे भी लोगों के पर्स या जंजीर चुराने जैसे बातों की तरफ रुख करते हैं, ऐसा सामने आया है । कितनी बार तो पैसे प्राप्त करने के चक्कर में उनसे प्राणघातक हमले या गलती से हत्या भी हो जाती है । एक बार अपने बच बच्चियां इस चक्कर में फंस गए है, यह ध्यान में आते ही घबराकर धैर्य छोडो मत सबसे पहले बच्चे को अपने विश्वास में लेकर इन सबकी पहले बच्चे को अपने विश्वास में लेकर इस सबकी शुरूआत कहाँ से हुई यह समझने का प्रयत्न करे । यह आपसे ठीक से बोलता हो तो समुपदेशक की सहायता लें या सीधे मानसिक उपचार तज्ञ डॉक्टर के पास ले जाए । दुर्भाग्य से यह समस्या बढ रही है । परन्तु उस गति से अच्छे व्यसनमुक्ती केंन्द्र बने नहीं हैं । कुछ उपलब्ध है । व्यसनमुक्ति, पर उसके मानसशास्त्र पर उपाय तथा अन्य उपचार के साथ काम किया जाता है । साधारणतया महीने में चार पांच हजार से अधिक रक्कम खर्च करने वाले व्यसनमुक्ति केन्द्र भी उपलब्ध हैं। निम्न आर्थिकस्तर वाले लोगों के लिए पूरीतरह से मुफ्त एकाध केन्द्र हैं । परन्तु यह आगे की बात है ।

एक बार एक छह फूट का मोटाताजा व्यक्ति अपने अट्ठारह वर्ष के बच्चे को लेकर समुपदेशन के लिए आया था । पिता बोल रहे थे और लडका एक जगह पर नजर एकटक लगाए बैठा था । पिता ने बताया कि पहले जहाँ रहते थे, वहाँ अच्छी संगता नहीं थी । इसलिए बच्चे को नशा करने की आदत लग गई । वह आदत तथा संगत छूट जाए इसलिए एक अच्छे परिसर में बडी

इमारत में किराए से घर लेकर रहने लगे हैं । परन्तु उसका व्यसन शुरू ही है । वह व्हाइटनर मुठ्ठी में लेकर उसकी गंध लेता रहता है, जिससे लिफ्ट में आने जाने वाले लोगों को कष्ट हो रहा है । लोग पिता के पास बच्चे की शिकायत करते वह पहाड जैसा दिखनेवाला व्यक्ति अन्दर से ढह गया और दहाडे मारकर रोने लगा । किस बाप को अपने बच्चे को व्यसनमुक्ति केंद्र में रखने की इच्छा होगी ? परन्तु मैंने सारे उपाय कर लिए और अब मैं थक गया हूँ । अब तो इस नए अहाते में भी प्रतिष्ठा नहीं रही । सब मेरी तरफ इसका बेटा नशेबाज हैं, ऐसी नजर से देखते हैं या फिर मुझे ऐसा लगता है और मुझे शर्म आती है । अब तो मैंने भी लोगों से नहीं मिलना बन्द कर दिया। ऐसी उस हताश पिता की व्यथा थी ।

सीधीसादी ग्यारहवी कक्षा की निशा उसके मां की इकलौती लडकी थी । निशा की मां इंजिनीयर थी । अपनी बेटी की पढाई के लिए स्वेच्छानिवृत्ति ले ली थी । वे जिस इमारत में रहते थे, उस इमारत की छत पर निशा अपने मित्र, सखियों को लेकर पार्टी करती थी । सखियाँ कभी कभार रहती थी परन्तु मित्र ज्यादा थे । प्रारंम्भ में मां ने इस तरफ ध्यान नहीं दिया परन्तु जब अचानक एक दिन मां का ध्यान गया । एक दिन देखा कि शराब की शीशियां तथा ड्रग्स के पेकेट आदि चीजें मिली, तब ''दोस्तों को हकाल दिया है'' इसलिए निशा ने शोर मचाया और पूरी इमारत के लोग जमा हो गए। इस के बाद निशा की मां ने तो उसे समुपदेशन के लिए लाया । निशा जोर से चिल्ला रही थी कि अच्छा धनवान पति देखकर मेरा ब्याह कर दो । मैं बहुत सुन्दर हूँ इसलिए आसानी से धनवान लडका मुझे पसन्द कर लेगा । परन्तु मुझे पढना नहीं हैं । उसे ग्यारहवी की पढाई ही कठिन लग रही थी । इस व्यसन के कारण समुपदेशन के कई सत्रों के बाद निशा में परिवर्तन आया । मां के दिए आधार के बाद तथा समुपदेशन की सहायता से निशा इन सब बातों से बाहर निकल पाई और उसने अपना शिक्षण पूरा किया । आज वह अपने क्षेत्र में अच्छा काम कर रही है ।

इन सब में सबसे पहले पालकों को ही अपने बच्चों को आधार देना होता है । व्यसनमुक्ति केंद्र में जाने के बाद वहाँ के तज्ञ लोग सहायता करेंगे ही परन्तु वहाँ तक पहुंचाने का काम तो पालकों को ही करना पडेगा । इस व्यसनमुक्ति के कार्यक्रमों को डिटोक्स प्रोग्राम कहते हैं । शरीर में से विषारी द्रव्य तो कुछ दिनों में बाहर निकल जाएंगे परन्तु मानसिक रूप में डीटॉक्स होने के लिए बच्चों को अपनाए और आधार दे तो ही इन सबसे बाहर निकलेंगे ।

शारीरिक संबधों से उत्पन्न समस्या :

केवल ड्रग्स यही एक चुनौती नहीं अपितु अनुचित उम्र में शारीरिक संबध तथा उससे उत्पन्न समस्या पालकों के सामने

चुनौती हैं । १७ वर्ष की मीरा मां से नजरें मिलाने से कतराती थी । कक्षा से घर आते ही थक गई हूँ ऐसा कहकर कमरे में सो जाती। मां से काम में समय निकाल कर गप्पे मारने कहने वाली मीरा अब टालने क्यों लगी है ! एक बार वह स्नान को जाने के बाद मां ने उसका बेग टटोला तो उसमें प्रेम की चिट्ठियां भी तथा एक नेगेटिव ट्रेस्ट थी । मां को सदमा लग गया । उतने में मीरा बाहर आई और पर्स देखकर मां से लिपट गई और खूब रोने लगी । हतोत्साहित न करते हुए मीरा को दिलासा दिया और सारा प्रकरण समझ लिया । मीरा को उसकी कक्षा का सोहम बहुत अच्छा लगता था । उसने सोहम का सहारा लिया और शारीरिक संबंध की मांग की । प्रेम और विश्वास हो तो हाँ कहेंगी ऐसा कहकर मानसिक दबाव डाला । उसने भी प्रेम प्रमाणित करने के लिए यह मांग स्वीकार की अब उसे इस सबका बहुत हो रहा है । पालक कहेंगे कि पश्चात बुद्धि किस काम की ? परन्तु १८ वर्ष के बाद जब मस्तिक का फ्रंट लॉब विकसित होगा तभी उसे परिणाम की तथा अच्छे बुरे का ज्ञान होता है । तबतक उसेसब बाते थ्रिल लगती है । यह हमें ध्यान में रखना चाहिए ।

कई प्रकरणों में विवाह के पहले या अल्पवय में शारीरिक संबंध यह कॉलेज ही नहीं तो शाला से ही शुरू हो जाते । दिखते हैं शाला से ही पॉक्सो कानून में बताए अनुसार बलात्कार तथा लडकों पर किए गए लैगिक शोषण भी इसी प्रकार में आते हैं । क्योंकि वह लडकी स्वीकृति देने के लिए सज्ञान नहीं जवानी के चित्रपटो का प्रभाव यह नया विषय नहीं । अब इन चित्रपटों का स्थान वेब सिरीज ने लिया है । सच तो यह है कि वेब सिरीज के माध्यम से कितने ही उत्तम विषय बताए जाते हैं परन्तु कई बार वेब सिरीज की गाडी अश्लील संवाद गालियाँ कुछ खास दृश्य, शारीरिक हिंसा दिखाए बिना आगे सरकती नहीं ।

वेब सिरीज के माध्यम से बच्चों तक से सारी बातें विस्तृत पहुंच रही है । उसमें दिखाते है । यह (रील लाइफ) इतने समय दिखती है कि बच्चे उस (रीअल लाइफ) यानी असली जीवन में ऐसा ही होता है ऐसा समझने लगते है या फिर उनकी मूल्य–व्यवस्था समझधारणा बनने में इस माध्यम का प्रभाव पडता है । परन्तु अपने सच्चे जीवन में परिस्थिति आज भी प्रधानता से कुटुंब प्रधान ही है तथा विवाहसंबंधों पर ही आधारित है । इसलिए पाश्चात्य या परदे पर की जीवन शैली अपनाने के चक्कर मे मित्रों से रखे शारीरिक संबंध सामने आने पर भारत में आज भी विवाह में रूकावट आ सकती है। क्योंकि बाहर आधुनिकता के नाम पर गैरवर्तन बतानेवाले अधिकांश लोग भी घर में तो भारतीय पारिवारिक वातावरण ही चाहिये ऐसी मानसिकता में जीते है। इसलिए युवस्था या युवा होने पर इन बातों की कल्पना देने के लिए इन आंधियों से बचने के

लिए पालकों को उचित संवाद करते रहना चाहिए ।

समाज का विचार करते समय बच्चों पर आने वाले इन संकट को कैसे टाल सकेंगे , इस बात की जिम्मेवारी बच्चों से ज्यादा प्रौढों पर है । इसमें केवल पालक ही नहीं अपितु शिक्षक और अडोस–पडोस भी अपनी भूमिका निभा सकते हैं । हमारे साथ रहनेवाले बच्चे दूसरों के होने पर भी शिक्षक या पडोसी के नाते से हमारा क्या कर्तव्य है इसकी सतर्कता रखनी चाहिए । बच्चों के व्यवहार में जरा भी गलतराह दिखते ही पालकों का ध्यान उधर करने पर कई समस्याएं समय पर ही टल सकती है।

अमेरिका के भूतपूर्व अध्यक्ष बराक ओबामा अपने अध्यक्षपद के काल में ही भारत आए थे । उससमय विद्यार्थियों के साथ हुई एक चर्चा में ओबामा ने भारत की युवापीढी और उसकी चतुरता पर चर्चा की थी । भारत की युवा पीढि अपनी योग्यता के बल पर कुछ दशकों में देश संसार की महासत्ता बना सकती है, ऐसा उनका कहना था । भारत की ऐसी ही समझदार पुरूषार्थी युवापीढि ड्रग्स, शराब की लत हो या व्हीडीओ गेम्मस या अन्य एलेक्ट्रॉनिक खेलों का या व्यसन या नासमझी से किए शारीरिक संबंधो के कारण आए हुए कानूनी संकटों में फंसी तो उसका परिणाम देश के आनेवाले भविष्य पर निश्चित ही होगा । इसलिए यह संकट जानकर इससे बचने और धोखा टालने की समझ दिखानी होगी ।

सरकारी स्तर पर इस समस्या पर एक समय में युवाओं को एच.आय.व्ही एडस से बचाने के लिए जनजागृति की गई, वैसी ही नए धोखे से बचने के लिए अभियान चलाना होगा । उसीके साथ से व्यसनमुक्ति की आवश्यकता जान कर उस दिशा में काम करने की आवश्यकता हैं ।

बच्चों के इन, बस्तों का रहस्य समय रहते ही ध्यान में रखकर उसपर सबप्रकार से प्रयत्न करना, यह समय की आवश्यकता है।

हिन्दी भाषान्तर : **मधुश्री आर्य**

मो. ६३७७२३७१६०

काव्य भारती

कुछ बातें

कुछ बातें मन को उदास करती है
कुछ बातें कहने से जुबॉ डरती है ।

कुछ बचपन सब कुछ पाकर खुश है
कुछ तमन्ना अभावों में आहें भरती है ।

वो खुश है फिर आँखों में वीरानी कैसी
अंदर ही अंदर कौनसी टीस चुभती है ।

ससुराल में सारे सुख हाथ जोड़े खड़े हैं
मायके की आज़ादी को वह तरसती है ।

तरह–तरह के व्यंजन थाली में परोसे गये
वो आँखे माँ के हाथो की रोटी तलाशती है

प्रेरणा भारती

आज एक ऐसा अनुभव हुआ जिसे मैं शायद ही कभी भूल सकूं !

मेरे मोबाइल का स्क्रीन गार्ड दरक गया था । उसे बदलवाने के लिए एक छोटी–सी दुकान पर रुका। एक छोटी उम्र का लड़का वह दुकान चला रहा था। उसे मोबाइल दिखाया तो उसने कहा कि ऑरिजिनल, कम्पनी का स्क्रीन गार्ड एक सौ रुपये का होगा। मैंने उसे लगाने की स्वीकृति दे दी। वह किसी और के मोबाइल पर स्क्रीन गार्ड लगा रहा था । बहुत तसल्ली और सफाई से वह अपना काम कर रहा था। जैसे ग्राहक को निबटा कर पैसे जेब के हवाले करने की उसे कोई जल्दी ही न हो।

मुझे समझ में आया कि उसके हाथ में जो मोबाइल था वह स्विगी के एक डिलीवरी बॉय का था। बॉय जल्दी कर रहा था कि उसकी डिलीवरी लेट हो रही है, लेकिन मोबाइल वाला लड़का पूरे परफेक्शन के साथ अपना काम कर रहा था। काम पूरा हुआ, डिलीवरी बॉय ने उसे सौ का नोट दिया। मैंने चोर निगाहों से देखा कि मोबाइल वाले ने उसे बीस रुपये लौटाए हैं। डिलीवरी बॉय वहां से हट ही रहा था कि मैंने मोबाइल वाले लड़के से कहा कि तुमने इससे तो अस्सी रुपये लिए हैं, मुझसे सौ क्यों लोगे ?

यह बात जाते हुए डिलीवरी बॉय ने सुन ली। वह पलटा और मोबाइल वाले लड़के के हाथ में बीस रुपये थमाता हुआ मुझसे बोला, मैंने इससे बहुत रिक्वेस्ट करके बीस रुपये कम करवाए थे, लेकिन मैं नहीं चाहता कि मेरा नाम लेकर आप इसका नुकसान करें। इसलिए मैं इसे बीस रुपये लौटा रहा हूं। आप इसे सौ रुपये ही दें। यह कहते हुए वह सड़क के पार खड़ी अपनी बाइक की तरफ बढ़ गया। मैं निश्शब्द था। जैसे तैसे मैंने उस डिलीवरी बॉय को बुलाया और उसे आश्वस्त करते हुए कि उसका उदाहरण देकर मैं इस छोटी दुकानवाले का नुकसान नहीं करूंगा, उसे बीस रुपये वापस दिलवाए!

मैं समझ सकता हूं कि उस डिलीवरी बॉय के लिए बीस रुपये कितने महत्वपूर्ण होंगे। लेकिन उसे यह गवारा नहीं हुआ कि उसकी बचत की चपत मोबाइल वाले को लगे! कितनी बड़ी बात थी यह! ऐसे अनुभव ही हमें भरोसा दिलाते हैं कि **दुनिया बहुत अच्छी है!**

शैलेंद्र का गाना याद आ रहा है –

किसी का दर्द मिल सके तो ले उधार
किसी के वास्ते हो तेरे दिल में प्यार....
जीना इसी का नाम है!

एक अच्छी बात

अपने हिस्से का काम पूरी इमानदारी से करना ही सच्ची देशभक्ति हैं!

आरिफ बेग,

नासिक,से वाट्सप फारवर्ड किया हुआ।

(वाट्सप से साभार)

प्रेरणा भारती

असली गरीब कौन

ऋषि कणाद जंगल में रहते थे। उन्होंने जीवन में अपनी आवश्यकता को एकदम सीमित कर रखा था। वह परम संतोषी थे। किसानों के फसल काट लेने के बाद जो अन्न कण खेतों में बिखरे रह जाते थे, वे उन्हें बीनकर अपना पेट भरते थे। कहा जाता है कि इसीसे उनका नाम कणाद पड़ा था। किसी ने राजा से कहा कि आपके राज्य में एक ऐसा भी ऋषि है जो खेतों से अन्न के दाने चुनकर अपना भोजन तैयार, करता है। यह सुनकर राजा चौंक गए।

राजा ने तत्काल मंत्री को आदेश दिया कि आप भोजन और अन्य सामग्री लेकर ऋषि के आश्रम जाएं और उस ऋषि को देकर आएं। ऋषि को किसी अन्य वस्तु की आवश्यकता हो तो पता कर उसे भी भेजने की व्यवस्था करें। मंत्री जब बहुत सारी भोजन सामग्री और धन– धान्य लेकर महर्षि के पास पहुंचा तो महर्षि कणाद ने कहा, 'यह सब उन लोगों में बांट दो, जिन्हें इसकी जरूरत है।' इसतरह राजा ने तीन बार मंत्री को भेजा और तीनों बार महर्षि ने कुछ भी लेने से इनकार कर दिया। अंत में राजा स्वयं बहुत सा धन लेकर गए और उन्होंने महर्षि से उसे स्वीकार कर लेने की प्रार्थना की, लेकिन महर्षि ने उसे लेने से इनकार कर दिया और कहा कि मुझे इसकी आवश्यकता नहीं है।

राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने लौटकर पूरी बात रानी को बताई। रानी ने कहा, 'आपने भूल की। ऐसे साधु के पास कुछ देने के लिए नहीं, लेने के लिए जाना चाहिए।' राजा उसी रात महर्षि के पास गए और उनसे क्षमा मांगी। महर्षि कणाद ने कहा, 'बात माफी मांगने की नहीं, समझने की है। गरीब वह है जो सब कुछ होते हुए भी असंतुष्ट रहे और संपन्न वह है जो कुछ न होते हुए भी अधिक पाने की लालसा न रखे।' राजा महर्षि की बातों का मर्म समझ गए।

(संकलन : दीनदयाल मुरारका)

(नवभारत टाईम्स साभार)

गौरव लक्ष्य पाने के लिए कोशिश करने में हैं, न कि लक्ष्य तक पहुंचने में ।
आप जो करते हैं वह नगण्य होगा. लेकिन आपके लिए वह करना बहुत अहम है ।
हम जो करते हैं और हम जो कर सकते हैं, इसके बीच का अंतर दुनिया की ज्यादातर समस्याओं के समाधान के लिए पर्याप्त होगा।

प्रेरणा भारती

आध्यात्मिक विकास कोई पार्ट- टाईम जॉब नहीं है ।

– निर्मल जैन

मछलियों को लगता है कि जिस तरह वे तड़पती हैं पानी के लिए, पानी भी उनके लिए वैसे ही तड़पता होगा। लेकिन जैसे ही मछलियों को पकड़ने वाला जाल खींचा जाता है, पानी मछलियों को छोड़कर जाल के छिद्रों से बाहर निकल भागता है। हमने भी सांसारिक उपलब्धियों, सुविधाओं को लेकर ऐसा ही भ्रम पाल रखा है। अपने स्वस्थ्य और नैतिक मूल्यों को दांव पर लगा कर हम बड़ी–बड़ी गाड़ियां, आलीशान भवन, सुख–सुविधाओं के कितने ही उपकरण जुटाते हैं। गाड़ी में जरा–सा डेंट आ जाए, कोई उपकरण सुविधा देना बंद कर दे या भवन के किसी कंगूरे में दरार दिख जाए तो मन व्याकुल हो उठता है। यह सब हमारी एकांगी आसक्ति है। वास्तविकता तो यह है कि जब हम इस संसार से विदा लेंगे तो हमारी लाड़ली कार, विशाल अट्टालिका और वे सारे उपकरण हमारी विदाई पर लेशमात्र उदास नहीं होंगे।

हमसे बेहतर सोच तो पक्षियों की है। वे उन चीजों को पीछे छोड़ देते हैं जिन्हें साथ ले जाना जरूरी नहीं है। क्यों न हम भी ईर्ष्या, वैमनस्य, उदासी, भय और पश्चाताप के भार से मुक्त होकर उड़ना शुरू करें। तभी जानेंगे कि जिंदगी कितनी खूबसूरत है। आवश्यकता से अधिक संपदा का संग्रह हमें अपनी अंतरात्मा से विलग करता है। आत्मा या भावना से संबंध समाप्त होते ही उस खालीपन को भरने के लिए हम बाहरी स्रोतों जैसे शक्ति या संपदा के संचय पर अधिकाधिक आश्रित होते जाते हैं। जैसे– जैसे हम संपन्नता प्राप्त करते जाते हैं, वैसे ही वैसे हमारा जीवन रसहीन और खोखला होता जाता है। सुबह तैयार होकर मानो आखेट पर निकल पडते हैं । लौटते हैं देर रात को और सीधे बिस्तर की ओर भागते हैं।

न कोई पारिवारिक जीवन, न सामाजिक जीवन। पद, पैसे और प्रभाव की वासना चौबीसो घंटे नचाती रहती है। यह दासता का आधुनिक संस्करण है। यह पैसे के लिए जीवन देना है, न कि जीवन जीने के लिए पैसा कमाना। हम एक जिंदगी में दो जिंदगियां नहीं जी सकते। चिंताओं के साथ ऐश्वर्यपूर्ण जीवन या चिंतामुक्त सरल और शांत जीवन? यह सच है कि सभी को अपनी पसंद का जीवन जीने का हक है। लेकिन खास बात यह है कि हम अपना विकल्प खुद चुन रहे हैं या विकल्प हम पर आरोपित किए जा रहे हैं। आज सब इस दौड़ में हांफ रहे हैं कि चाहे जैसे भी हो अमीर बनो, नहीं तो तुम्हारा जीने का अधिकार खतरे में है। शक्तिशाली आध्यात्मिक विकास कोई पार्ट टाइम गतिविधि नहीं है। इसके लिए उच्च स्तर के आंतरिक फोकस और प्रतिबद्धता की आवश्यकता है। धन इसमें बाधक नहीं, धन तो सापेक्ष है, उसका संग्रह और उस संग्रह की सुरक्षा समस्या है। इस संग्रह और सुरक्षा में हम आध्यात्मिक विकास की ओर उतना ध्यान नहीं दे पाते जितना अपेक्षित होता है।

नतीजा यह कि हम आध्यात्मिकता के प्रमुख ध्येय अहं, क्रोध, लालच, वासना और आसावित से मुक्त नहीं हो पाते। इन बुराइयों के चंगुल में फंसे रह जाते हैं। एक बुराई से निकलकर दूसरे, में पहुंचते हैं और इस तरह बुराई के दुष्चक्र में पड़े अपनी सुख–शांति की बलि चढ़ाते रहते हैं। एक और गड़बड़ यह होती है कि हम भौतिक समस्याओं पर तो ध्यान केंद्रित करते हैं, लेकिन उनको पैदा करने वाली मनोवृत्ति और आंतरिक समस्याओं की उपेक्षा करते रहते हैं। जबकि आंतरिक समस्याओं के निवारण होते ही भौतिक समस्याओं का स्वयं ही समाधान हो जाता है।

प्रेरणा भारती

एक अमरिकी खद्दरधारी

३ दिसंबर १९२३ की घटना, समय सूर्योदय के पहले का था। वाघा रेलवे स्टेशन पर पंजाब मेल के रुकते ही प्रथम श्रेणी के डिब्बे में दो सिपाही घुसे। उनकी नजरें एक खद्दरधारी गोरे को तलाश रही थीं, जो आसानी से मिल गया। एक सिपाही ने उनसे कहा, 'आपको देशद्रोह के आरोप में गिरफ्तार किया जाता है। आपको हमारे साथ लाहौर पुलिस स्टेशन चलना होगा।' खद्दरधारी शख्स के पास साथ जाने के सिवाय कोई चारा नहीं था। उन्होंने चुपचाप इनके साथ चलना ही उचित समझा।

पुलिस स्टेशन की औपचारिकता पूरी होने के बाद उन्हें लाहौर के मैजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया। मैजिस्ट्रेट अंग्रेज था। नाम था एम.एल. फरार। उसने पहले से ही फैसला तैयार कर रखा था। गोरा होने के नाते एक अन्य गोरे से उसे कोई सहानुभूति नहीं थी। उसने कहा, 'आपको दस हजार रुपये अदालत में जमा करने होंगे। यह राशि अच्छे चाल-चलन की गारंटी होगी। बाद में आपका रवैया ठीक रहा तो फिर से गिरफ्तार नहीं किया जाएगा। पैसा नहीं जमा करने पर छह महीने का कारावास।' सजा सुनने वाला यह खद्दरधारी कोई और नहीं, अमेरिकी नागरिक सैमुएल स्टोक्स थे। उन्होंने जुर्माना भरने से इनकार कर दिया।

वह फिलाडेल्फिया से शिमला के कुष्ठरोगियों की सेवा करने आए थे। जलियांवाला बाग हत्याकांड से आहत होकर वह गांधीवादी बने। ३१ जुलाई १९२१ को परेल, बॉम्बे में सार्वजनिक रूप से अपने कपड़ों की होली जलाई, खादी पहना और असहयोग आंदोलन में शामिल हुए। यह घटना बताती है कि अन्याय, अत्याचार और जुल्म के विरोध का जज्बा जाति, धर्म या राष्ट्र की सीमाएं नहीं देखता। इंसाफ का आग्रह इंसानियत का तकाजा है। सैमुएल स्टोक्स ने सिर्फ अंग्रेजों का विरोध ही नहीं किया। उन्होंने कोटगढ़ में गरीबों के लिए स्कूल खोला, किसानों की आर्थिक दशा सुधारने के लिए काम किया। उन्होंने जरूरतमंदों की सेवा को ही अपना धर्म माना।

(संकलन : हरिप्रसाद राय)

(नवभारत टाईम्स से साभार)

कमजोर कभी क्षमाशील नहीं हो सकता है. क्षमाशीलता ताकतवर की निशानी है ।
ताकत शारीरिक शक्ति से नहीं आती है. यह अदम्य इच्छाशक्ति से आती है ।
धैर्य का छोटा हिस्सा भी एक टन उपदेश से बेहतर है ।

आंतर भारती और पाठक

वेबसाईट देखा, पत्रिका देखी । बहुत अच्छा ,बहुत संतोष जनक । योगी वेमना के विचार साकार हुए । ज्ञान फैलाना डिजिटल तकनीक का एक मात्र सदुपयोग है । तुम्हारे प्रयास ऐसे ही सफल होते रहे ।।

कुमार शुभमूर्ति (बिहार)

****

* उत्तम पत्रिका ! उत्तम वृत्तों की दखल !

– आरिफ बेग, नासिक

साने गुरुजी की कर्मभूमि में

विशेष बात है कि ९७ वा अ.भा. मराठी साहित्य सम्मेलन अमलनेर में प.पू साने गुरूजी की कर्मभूमि में संपन्न हो रही है । इस सम्मेलन के अध्यक्षरूप में प्रा. रमेश पानसे को चुना जाए, ऐसी शिफारस हम सभी मराठी साहित्य मंडल से करें,ऐसी मेरी विनती है ।

– मयूर बालकृष्णअमलनेर

आंतरभारती बैठक संबंध में सभा

उदगीर : १० मई को अजमेर में सम्पन्न होनेवाली आंतर भारती बैठक के संदर्भ में पूर्व तयारी के हिसाब से आंतर भारती की सन्माननीय सदस्या कांताताई कलबुर्गे एवं हनमंतराव बल्ला परिवार की ओर से स्वगृह में एक सुंदर नियोजनबध्द मीटींग आयोजित की गयी थी ।

उदगीर शहर से ४५ आंतर भारती प्रेमी (राजस्थान) अजमेर की यात्रा में सहभागी होने वाले हैं । इन सबने यात्रा संदर्भ में धनराशि यात्राप्रमुख संजयकुमार (वसमत) को भेज दी है । आंतर भारती के ज्येष्ठ सदस्य आद. गुंडप्पा पटणे सर ने यात्रा में सहभागी सदस्यों को मार्गदर्शन के साथ शुभकामनाएं दी ।

– शिवाजीराव आपटे तथा शिवलिंग मठपती

आंतर भारती अंबाजोगाई एक आवाहन

आंतर भारती–विद्यार्थिनी एवं महिला सहायता निधि को दान तथा आर्थिक मदद करने का आवाहन प्रकल्प संयोजक ज्योति शिंदे ,अंबाजोगाई, आंतर भारती अध्यक्ष दत्ता वालेकर तथा आंतर भारती राष्ट्रीय के कार्याध्यक्ष अमर हबीब ने किया है ।

– प्रेषक : ज्योति राहुल शिंदे, अंबाजोगाई

आंतरभारती अंबाजोगाई की ओर से ४ अप्रैल को आयोजित सहभोजन कार्यक्रम के कुछ चित्र

मई 2023 पंजीकरण 11257/66
डाक पंजीकरण : L2/RNP/OMD/71/2021-23

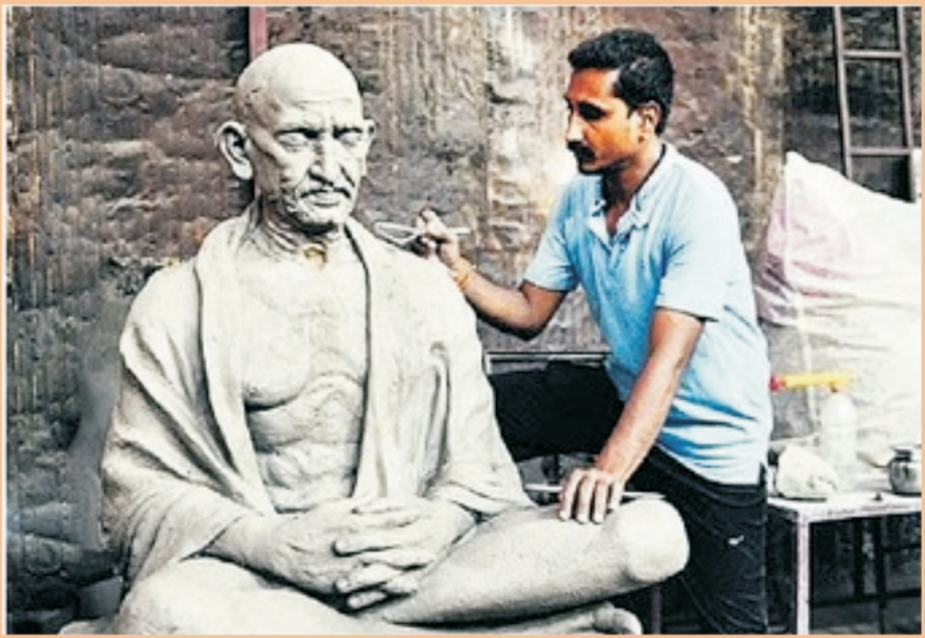

बोरामणी (सोलापुर) के ग्लोबल व्हिलेज में स्थित बापुकुटी के परिसर में प्रवेशद्वार के पास महात्मा गांधी की प्रतिमा स्थापित होनेवाली है, उसका चित्र ।